प्राक्कथन

"भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए यदि-बल प्रयोग करने की भी आवश्यकता हो तो ऐसा करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए।" इस महत्त्वपूर्ण उक्ति को क्रियात्मक रूप में चरितार्थ करने की प्रेरणा देनेवाले सशस्त्र क्रान्ति के आद्य प्रवर्तक पं० श्यामजी कृष्ण वर्मा के विषय में हमारे देशवासियों की जानकारी बहुत कम है। इसका एक कारण यह है कि श्यामजी ने अपने जीवन के अन्तिम ३३ वर्ष इंग्लैण्ड तथा स्विट्जरलैण्ड में व्यतीत किये और उनकी मृत्यु भी विदेश की धरती पर ही हुई। अत: यहाँ के लोग उनके विचारों, धारणाओं एवं कार्यों के सम्बन्ध में बहुत कम जान पाये। एक अन्य कारण यह भी रहा कि श्यामजी का राजनैतिक जीवन सैद्धान्तिक अधिक रहा, व्यावहारिक कम। उन्होंने जिन सिद्धान्तों का निरूपण किया उन पर चलने के लिए अन्यों को तो प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया, किन्तु स्वयं एक सिद्धान्त-स्थापक (Theoritician) आचार्य के रूप में ही रहे। तथापि, यह स्वीकार करना ही होगा कि वीर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगड़ा तथा अनेक अन्य क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कृत्यों के पीछे श्यामजी की अदम्य प्रेरणा कार्य कर रही थी।

यहाँ प्रश्न होता है कि श्यामजी की देशभक्ति तथा स्वतन्त्रता के प्रति उनकी अदम्य इच्छा के पीछे कौन सी प्रेरणाएँ कार्यरत थीं? जैसाकि हम उनके जीवनचरित में देखते हैं, वे अपनी युवावस्था में ही स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये थे। स्वामी जी से उन्होंने एक ओर संस्कृत का अद्वितीय एवं अप्रतिम ज्ञान प्राप्त किया तो दूसरी ओर स्वदेशनिष्ठा के दिव्य भावों को भी उनसे ही ग्रहण किया। स्वामी जी के प्रति उनका सम्मानभाव जीवन-पर्यन्त यथावत् रहा और वे अत्यन्त कृतज्ञता-पूर्वक उनका स्मरण करते थे। इसी प्रकार इंग्लैण्ड में रहकर अध्ययन करते समय तथा बाद में स्थायी रूप में वहीं बस जाने पर, वे यूरोप के महान् चिन्तकों और दार्शनिकों के विचारों से भी प्रेरणा ग्रहण करते रहे। मिल और स्पैन्सर के विचारों का उन पर अमिट प्रभाव था।

अंग्रेज अधिकारियों की इस बात के लिए कड़ी आलोचना की कि उन्होंने तिलक जैसे देशभक्त पर मिथ्या आरोप लगाकर उन्हें कारावास का दण्ड दिया है। परन्तु उन्होंने यह भी लिखा कि भारत का राष्ट्रीय संग्राम दिन प्रतिदिन उग्रतर होता जा रहा है। तिलक की गिरफ्तारी अंग्रेज सरकार के लिए अन्ततः दुखद सिद्ध होगी। निष्कर्षरूप में उन्होंने आशा व्यक्त की कि भारतवासियों पर किये जानेवाले ये अत्याचार उनकी स्वराज्य प्राप्ति की आकांक्षा को तीव्रतर बनायेंगे जिससे कि वे शीघ्रताशीघ्र अपने देश को आज़ाद करा सकें।

श्यामजी की इन गतिविधियों ने ब्रिटिश समाचारपत्रों को उनके प्रति अधिक उग्र तथा असहिष्णु बना दिया। 'डेली मेल' (पैरिस संस्करण) ने अपने ५ मई के अंक में लिखा- "अधिकारीवर्ग यह जानता है कि पैरिस में नौजवान हिन्दुओं का एक ऐसा गुट है जो भारत में ब्रिटिश राज्य के खिलाफ षड्यन्त्रों की रचना करता है। लंदन में भी ऐसे संगठन हैं। उनका एक साप्ताहिक पत्र भी निकलता है जो ग्रेट ब्रिटेन पर नाज़ायज तौर पर आक्रमण करने में बंगाल के पत्रों से भी बाजी मार रहा है। 'इण्डियन सोशियॉलॉजिस्ट' (यही उस पत्र का नाम है) की बड़ी संख्या में प्रतियाँ भारत में भेजी जाती हैं और भारत की देशी भाषाओं के पत्र इसे बहुशः उद्धृत करते हैं।"

इन आक्षेपों का उत्तर देते हुए श्यामजी ने 'डेलीमेल' के ९ मई १९०८ के अंक में अपना निम्न वक्तव्य प्रकाशित कराया- "भारत में इस समय राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं की जैसी धरपकड़ हो रही है तथा निर्दोष देशभक्तों पर जैसे अत्याचार हो रहे हैं, उसे देखते हुए मैं यह सुस्पष्ट शब्दों में घोषित करना चाहता हूँ कि भारत पर पूर्णतया भारत के निवासियों का ही अधिकार वांछनीय है। वे ही अपने भाग्यविधाता तथा अपने विधान के निर्माता हैं।" इस प्रकार पैरिस में रहते हुए भी श्यामजी भारतीय स्वतन्त्रता अन्दोलन का समर्थन करने का कोई अवसर अपने हाथ से जाने नहीं देते थे।

इधर लंदन में उनके सुयोग्य शिष्य और अनुयायी विनायक दामोदर सावरकर स्वाधीनता के दीपक को निरन्तर जलाये रखने का प्रयास कर रहे थे। श्यामजी तथा सरदारसिंह राणा की अनुपस्थिति में उन्होंने 'इण्डिया हाउस' के संचालन का भार अपने ऊपर ले लिया था। १० मई १९०८ को १८५७ क्रान्ति की ५१वीं वर्षगांठ सावरकर ने अत्यन्त धूमधाम से मनाई। 'वन्दे मातरम्' से आरम्भ होनेवाले निमन्त्रण पत्र छपाकर वितरित किये गये। उक्त कार्यक्रम के अन्तर्गत

इस प्रकार सशस्त्र चेष्टाओं के द्वारा स्वाधीनता प्राप्ति की वकालत करने पर भी श्यामजी का विश्वास था कि अभी ऐसा करने की स्थिति नहीं आई है। उनकी धारणा थी कि सब प्रकार से अंग्रेज सरकार से असहयोग करके भी स्वाधीनता अर्जित की जा सकती है। ब्रिटिश अखबार जब भारतीय देशभक्त क्रान्तिकारियों को समूल नष्ट कर देने की बातें करते तो श्यामजी का खून खौल उठता। उन्होंने अपने पत्र में लिखा- "जो अंग्रेज इटली तथा हंगरी के निवासियों की आस्ट्रिया के खिलाफ विद्रोह करने की वकालत करते हैं, तथा जो पोलैण्ड को रूस के विरुद्ध खड़ा होने की सिफारिश करते हैं, भला उन्हें क्या हक है कि वे ब्रिटिश अत्याचारों के खिलाफ विद्रोह करनेवाले भारतीयों को बुरा-भला कहें?"

पैरिस के एक समाचारपत्र L'Eclaire को इण्टरव्यू देते हुए श्यामजी ने सविनय अवज्ञा तथा बहिष्कार का पुनः समर्थन किया। उन्होंने इस संदर्भ में कहा- "जिस दिन अंग्रेज अधिकारियों को हिन्दुस्तानी नौकर नहीं मिलेंगे, पुलिस में भर्ती योग्य हिन्दुस्तानी सिपाही, सेना में भर्ती किये जानेवाले रंगरूट बनने के लिए भी कोई भारतवासी तैयार नहीं होगा, बस समझ लो उसी दिन ब्रिटिश राज्य यहाँ से समाप्त हो जायेगा।"

जब इस पत्र ने श्यामजी से आतंकवादी क्रान्तिाकारियों के विषय में सीधा प्रश्न पूछा तो उत्तर में उन्होंने कहा कि "भारत के इन वीरों को आतंकवादी या अराजकतावादी कहना ग़लत है। यदि प्रफुल्ल चाकी, खुदीराम बोस, कनाईलाल दत्त आदि ने कुछ किया है तो वह देश को अराजकता की ओर धकेलने का प्रयत्न नहीं हैं, बल्कि उनके कार्य भारत में राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की दिशा में किये गये प्रयत्न थे।" फ्रांसीसी पत्रकार ने अब उनसे सीधा सवाल पूछा- आपके कथन से ऐसा लगता है कि भारत में इधर बंगाली क्रान्तिकारियों ने जो कुछ किया है, उससे आप सहमत नहीं हैं? उत्तर में श्यामजी ने अपने आदर्श गुरु एवं दार्शनिक हर्बर्ट स्पैन्सर की यह उक्ति दोहराई- "अत्याचार का प्रतिरोध करना केवल न्यायोचित ही नहीं, अपितु आवश्यक भी है। अत्याचार का प्रतिकार न करना 'स्व' को ठेस पहुँचाना है, व्यापक लोकहित के लिए भी वह घातक है।"

इस प्रकार श्यामजी के विचार अधिकाधिक स्पष्ट होकर देशवासियों के समक्ष आये। उन्होंने निस्संकोच भाव से भारत में क्रान्तिकारी चेष्टाओं का समर्थन किया, साथ ही वे इस बात पर जोर देते रहे कि शान्तिपूर्ण बहिष्कार तथा विदेशी शासन के प्रति पूर्ण असहयोग के द्वारा भी उसे समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने देश के लिए प्राण देनेवालों के त्याग और बलिदान की प्रशंसा की, किन्तु साथ ही विदेशी तानाशाही को समाप्त करने के लिए शान्तिपूर्ण युद्ध का जयघोष भी किया।

मादाम कामा द्वारा फहराया गया भारतीय राष्ट्रध्वज (जिसकी कल्पना और निर्माण भी मैडम कामा ने ही किया था) श्री राणा के परिवार में आज भी सुरक्षित हैं। यदि भारत सरकार अथवा किसी शोध-संस्थान द्वारा यह डायरी प्राप्त की जा सके, तो भारतीय इतिहास में कुछ नये अध्याय जोड़े जा सकते हैं तथा श्यामजी कृष्ण वर्मा के सम्बन्ध में भी नवीन जानकारी मिल सकती है। खेद है कि ऐसा प्रयत्न अभी तक नहीं हो सका है।

श्री इन्दुभाई-लिखित जीवनी को मुख्य आधार बनाकर और स्वामी दयानन्द तथा श्यामजी के पारस्परिक सम्बन्धों की विवेचना से युक्त इस जीवन चरित का महत्त्व निर्विवाद है। श्यामजी के जीवन और कार्यों के बारे में शोधकार्य का तो आज भी अवकाश है। विशेष रूप से फ्रांस, रूस तथा इंग्लैण्ड के राष्ट्रीय अभिलेखागारों में छानबीन की जाये, तो अनेक नवीन तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं। महान् लेखक मैक्सिम गोर्की के पत्र में श्यामजी भारत के बारे में प्राय: लेख लिखा करते थे। इन लेखों का रूसी भाषान्तर छपता था। गोर्की तथा अन्य रूसी क्रान्तिकारियों के साथ श्यामजी का जीवन्त सम्पर्क था। गोर्की ने अपने एक लेख में श्यामजी को भारत का गेरीबाल्डी और मैजिनी (इटली के दो देशभक्त) कहा था। यह लेख गोर्की की रचनाओं के संग्रह में भी प्रकाशित हुआ है। इससे इस बात का प्रमाण मिलता है कि संसार-भर में साम्राज्यवादियों की गुलामी से जनता को मुक्त करानेवाले नेताओं से श्यामजी का जीवन्त सम्पर्क था।

यदि श्यामजी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में न आते तथा उनके क्रान्तिकारी विचारों का संस्पर्श उन्हें न मिला होता, तो वे और चाहे कुछ भी बन जाते-महान् संस्कृतज्ञ, तेजस्वी पण्डित, बैरिस्टर तथा एक सफल प्रशासक, (वे बने भी थे) किन्तु क्रान्ति-सेनापति का विरुद उन्हें प्राप्त नहीं होता। तेजस्वी, ओजस्युक्त, मेधावी, विचारशील श्यामजी का एक प्रगतिशील क्रान्तिकारी के रूप में परिवर्तन तो तभी हुआ जब वे दयानन्द के सम्पर्क में आये और ऋषि के क्रान्तिकारी विचारों का स्पर्श उन्हें मिला। श्यामजी का समग्र क्रान्तिकारी अस्तित्व दयानन्द के विचारों पर निर्भर था। उनके क्रान्तिकारी विचारों और कार्यों की जड़ में दयानन्द थे। उन्हें इंग्लैण्ड जाने की प्रेरणा भी स्वामी जी ने ही दी थी।

दयानन्द का श्यामजी के ऊपर जो प्रभाव पड़ा वह प्रथम और पुरा असर था। विदेश में महान् दार्शनिक हर्बर्ट स्पैन्सर के विचारों ने उनकी